धन्यवाद ज्ञापन

अपने इस शोध-प्रबंध को पूरा करने में मुझे जिन लोगों का सहयोग मिला, उनमें सर्वप्रथम स्थान मेरी शोध निर्देशिका प्रो० शन्नो पाण्डेय का है। मेरी परम पूज्य शोध निर्देशिका डॉ. शन्नो पाण्डेय, जिनके प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा और स्नेह है। मैं इस बात का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा कि मेरी शोध निर्देशिका प्रो० शन्नो पाण्डेय ने मुझे इस विषय पर न केवल शोध कार्य करने की प्रेरणा दी बल्कि शोध करने के समय अपने सौहार्दपूर्ण व्यवहार तथा कुशल निर्देशन द्वारा मेरा मार्गदर्शन भी किया। उनके सफल मार्ग-निर्देशन से ही मैं विषय को स्पष्ट करने का प्रयास कर पाया हूँ। उन्हीं के दिशा-निर्देशन से ही यह शोध- प्रबंध लिखा जा सका है। मैं मेरी पूज्य गुरू का हार्दिक अभिनंदन करते हुए आभार ज्ञापित करता हूँ !

इसके साथ ही मैं हिन्दी की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० शैलजा भारद्वाज, प्रो० दक्षा मिस्त्री, वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो० कल्पना गवली और हिन्दी विभाग के अन्य समस्त प्राध्यापक-गण प्रो० दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा, डॉ० कनुभाई निनामा, डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, डॉ. एन. एस. परमार, डा० मनीषा ठक्कर, डॉ. अज़हर ढेरीवाला को आभार ज्ञापित करता हूँ ! साथ ही तकनीकि ज्ञान एवं अनुसंधान की विधियों का सम्यक मार्गदर्शन करने वाली डॉ. अनीता शुक्ल का मैं विशेष आभारी हूँ ! जिन्होंने शोध में नवाचार एवं वस्तुनिष्ठता का गुर मुझे सिखाया है। सहज एवं तार्किक प्रज्ञा की धनी डॉ. अनीता शुक्ल हमेशा हम शोधार्थियों की सहायता एवं मार्गदर्शन हेतु तत्पर रहती हैं। मैं एक बार पुनः उनका आभार मानता हूँ !

इसके पश्चात् मै महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के उन समस्त शोधार्थियों को आभार ज्ञापित करता हूँ ! जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रस्तुत शोध की सफलता में अपना योगदान दिया है। विशेषकर-डॉ. मिथिलेश मिश्र, विनोद कुमार

शुक्ल, दिलीप तिवारी, जगदीश मौर्य, मनीष कुमार पाण्डेय, सायमा खान, राकेश कुमार यादव, आनन्द तिवारी का।

तत्पश्चात् मैं अपने पूज्य बड़े पिताजी (श्री श्याम सुंदर तिवारी), मम्मी-पापा (श्रीमती पार्वती देवी एवं श्री राम गोपाल तिवारी) के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए कहना चाहूँगा कि माता-पिता के सहयोग एवं संस्कार से ही मैं आज यहाँ तक पहुंचा हूँ उनके आशीर्वचन की महत्ता का मैं हार्दिक अभिनंदन करते हुए आभार ज्ञापित करता हूँ !

इसके अतिरिक्त मैं अपनी धर्मपत्नी (जया तिवारी) का भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा ध्यान शोध प्रबंध शीघ्र पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया।

मैंने इस शोध प्रबंध को श्रेष्ठ बनाने की भरसक कोशिश की है। मैं चाहता हूँ कि यह शोध प्रबंध स्त्री में उनके अधिकारों के प्रति चेतना जगाए ।मैं स्वयं यह मानता हूँ कि स्त्री को अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करना होगा। और प्रत्येक नारी अपने स्वत्व को पहचाने और समाज में अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करे। यही मेरे शोध कार्य का सबसे अहम उद्देश्य है।